



# ROHANSH SARASWAT

14 Apr 2025

11:34 AM

Raipur

Model: Web-MyKundli

Order No: 121857201

## सूचना

ज्योतिष एक विज्ञान है जिसके अंतर्गत ग्रहों का मानव जीवन पर पड़ने वाले प्रभावों का अध्ययन किया जाता है। इसके प्रभावों की भविष्यवाणी करने हेतु ग्रहों की स्थिति एवं इसके बल की गणना की जाती है। जन्मपत्रिकाओं की गणना अति सटीक है जिसमें बिल्कुल सही रेखांश प्रयुक्त हुए हैं। सामान्य तौर पर इसमें चित्रापक्षीय अयनांश का प्रयोग किया जाता है जबतक कि आप दूसरे अयनांश का विकल्प न मांगें।

कम्प्यूटर जन्मपत्रिकाएं मुख्य रूप से पाराशरी पद्धति पर आधारित है। हालांकि इसमें ताजिक पद्धति, जैमिनी पद्धति, कृष्णमूर्ति पद्धति, प्रश्नशास्त्र एवं पाश्चात्य पद्धतियों का भी ज्योतिषीय गणना में मिश्रण किया गया है। फलादेश मुख्य रूप से विभिन्न प्राचीन शास्त्रों जैसे बृहत् पराशर, होराशास्त्र, मानसागरी, सारावली, जातकभरणम, बृहत् जातक, फलदीपिका, जातक पारिजात के अनुरूप, साथ ही अपने अनुभवों का भी समावेश करके बनाया गया है। फिर भी, ज्योतिष का मार्गदर्शन लेकर हम अपने भविष्य का संकेत मात्र प्राप्त कर सकते हैं। सिर्फ सृष्टि के निर्माता ब्रह्मा ही यह भविष्यवाणी कर सकते हैं कि आनेवाले समय में क्या घटित होगा ?

यह जन्मपत्रिका जन्म तिथि, जन्म समय एवं जन्म स्थान पर आधारित है जो कि जातक ने हमें उपलब्ध कराया है। अतः आंकड़ों की सटीकता से संबंधित हमारी कोई जिम्मेवारी नहीं है। ज्योतिषीय गणना एवं फलादेश जातक द्वारा उपलब्ध कराए गए विवरण के ऊपर आधारित है। जन्मपत्रिका में दिए गए फलादेश जातक के लिए सिर्फ संकेत मात्र है जिस पर जातक को सावधानीपूर्वक अमल करना चाहिए न कि हूबहू जैसा फलादेश में कहा गया है, बिना सोचे समझे उसे अपने जीवन में लागू करने की कोशिश करनी चाहिए। जन्मपत्रिका के विभिन्न पृष्ठों में दी गयी सूचनाएं किसी भी प्रकार के विवाद अथवा वैधानिक कार्यवाही के लिए उपयुक्त नहीं है। अतः जातक की स्वयं की कार्यवाही से उत्पन्न हुए किसी भी क्षति के लिए हम उत्तरदायी नहीं है।

लिंग \_\_\_\_\_: पुल्लिंग  
जन्म तिथि \_\_\_\_\_: 14/04/2025  
दिन \_\_\_\_\_: सोमवार  
जन्म समय \_\_\_\_\_: 11:34:00 घंटे  
इष्ट \_\_\_\_\_: 14:31:46 घटी  
स्थान \_\_\_\_\_: Raipur  
राज्य \_\_\_\_\_: Chhattisgarh  
देश \_\_\_\_\_: India

अक्षांश \_\_\_\_\_: 21:16:00 उत्तर  
रेखांश \_\_\_\_\_: 81:42:00 पूर्व  
मध्य रेखांश \_\_\_\_\_: 82:30:00 पूर्व  
स्थानिक संस्कार \_\_\_\_\_: -00:03:12 घंटे  
ग्रीष्म संस्कार \_\_\_\_\_: 00:00:00 घंटे  
स्थानिक समय \_\_\_\_\_: 11:30:48 घंटे  
वेलान्तर \_\_\_\_\_: -00:00:16 घंटे  
साम्पातिक काल \_\_\_\_\_: 01:01:29 घंटे  
सूर्योदय \_\_\_\_\_: 05:45:17 घंटे  
सूर्यास्त \_\_\_\_\_: 18:22:01 घंटे  
दिनमान \_\_\_\_\_: 12:36:43 घंटे  
सूर्य स्थिति(अयन) \_\_\_\_\_: उत्तरायण  
सूर्य स्थिति(गोल) \_\_\_\_\_: उत्तर  
ऋतु \_\_\_\_\_: वसन्त  
सूर्य के अंश \_\_\_\_\_: 00:20:07 मेष  
लग्न के अंश \_\_\_\_\_: 28:13:08 मिथुन

#### अवकहड़ा चक्र

लग्न-लग्नाधिपति \_\_\_\_\_: मिथुन - बुध  
राशि-स्वामी \_\_\_\_\_: तुला - शुक्र  
नक्षत्र-चरण \_\_\_\_\_: स्वाति - 3  
नक्षत्र स्वामी \_\_\_\_\_: राहु  
योग \_\_\_\_\_: वज्र  
करण \_\_\_\_\_: तैतिल  
गण \_\_\_\_\_: देव  
योनि \_\_\_\_\_: महिष  
नाड़ी \_\_\_\_\_: अन्त्य  
वर्ण \_\_\_\_\_: शूद्र  
वश्य \_\_\_\_\_: मानव  
वर्ग \_\_\_\_\_: मृग  
युँजा \_\_\_\_\_: मध्य  
हंसक \_\_\_\_\_: वायु  
जन्म नामाक्षर \_\_\_\_\_: रो-रोहित  
पाया(राशि-नक्षत्र) \_\_\_\_\_: रजत - रजत  
सूर्य राशि(पाश्चात्य) \_\_\_\_\_: मेष

## पंचांग

दादा का नाम \_\_\_\_\_ :  
पिता का नाम \_\_\_\_\_ :  
माता का नाम \_\_\_\_\_ :  
जाति \_\_\_\_\_ :  
गोत्र \_\_\_\_\_ :

कैलेंडर	वर्ष	मास	तिथि/प्रविष्टे
राष्ट्रीय	शक : 1947	चैत्र	24
पंजाबी	संवत : 2082	वैशाख	2
बंगाली	सन् : 1431	चैत्र	31
तमिल	संवत : 2082	चिथिराई	1
केरल	कोल्लम : 1200	मेदम	1
नेपाली	संवत : 2082	वैशाख	1
चैत्रादि	संवत : 2082	वैशाख	कृष्ण 1
कार्तिकादि	संवत : 2082	चैत्र	कृष्ण 1

### पंचांग

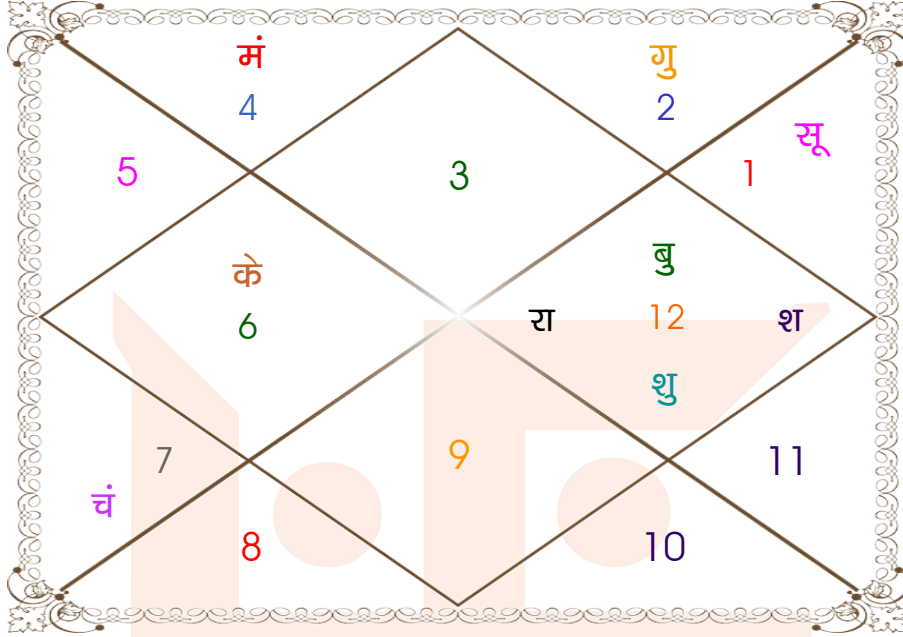
सूर्योदय कालीन तिथि \_\_\_\_\_ : 1  
तिथि समाप्ति काल \_\_\_\_\_ : 08:25:15  
जन्म तिथि \_\_\_\_\_ : 2  
सूर्योदय कालीन नक्षत्र \_\_\_\_\_ : स्वाति  
नक्षत्र समाप्ति काल \_\_\_\_\_ : 24:13:25 घंटे  
जन्म योग \_\_\_\_\_ : स्वाति  
सूर्योदय कालीन योग \_\_\_\_\_ : वज्र  
योग समाप्ति काल \_\_\_\_\_ : 22:37:47 घंटे  
जन्म योग \_\_\_\_\_ : वज्र  
सूर्योदय कालीन करण \_\_\_\_\_ : कौलव  
करण समाप्ति काल \_\_\_\_\_ : 08:25:15 घंटे  
जन्म करण \_\_\_\_\_ : तैतिल  
भयात \_\_\_\_\_ : 35:58:32  
भभोग \_\_\_\_\_ : 67:37:05  
भोग्य दशा काल \_\_\_\_\_ : राहु 8 वर्ष 5 मा 3 दि

### घात चक्र

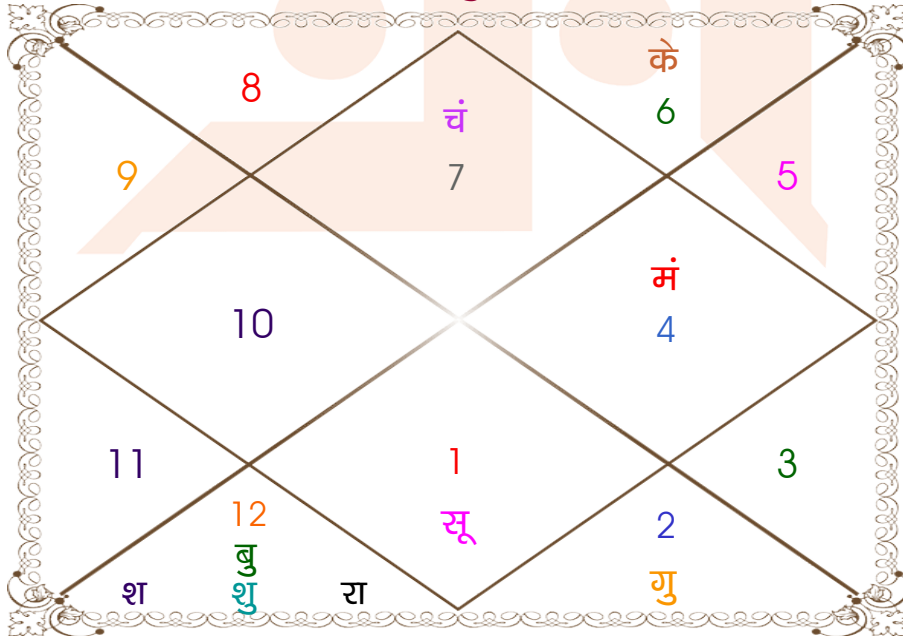
मास \_\_\_\_\_ : माघ  
तिथि \_\_\_\_\_ : 4-9-14  
दिन \_\_\_\_\_ : गुरुवार  
नक्षत्र \_\_\_\_\_ : शतभिषा  
योग \_\_\_\_\_ : शुक्ल  
करण \_\_\_\_\_ : तैतिल  
प्रहर \_\_\_\_\_ : 4  
वर्ग \_\_\_\_\_ : सिंह  
लग्न \_\_\_\_\_ : कन्या  
सूर्य \_\_\_\_\_ : कन्या  
चन्द्र \_\_\_\_\_ : धनु  
मंगल \_\_\_\_\_ : तुला  
बुध \_\_\_\_\_ : कर्क  
गुरु \_\_\_\_\_ : वृश्चिक  
शुक्र \_\_\_\_\_ : धनु  
शनि \_\_\_\_\_ : सिंह  
राहु \_\_\_\_\_ : मकर

# जन्म कुण्डली

## लग्न कुण्डली



## चन्द्र कुण्डली



## लग्न कुण्डली और दशा

### लग्न कुंडली

श रा	सू	गु	ल
			मं
		चं	के

### लग्न कुंडली

गु	सू	श रा
ल		
मं		
के	चं	

विंशोत्तरी  
राहु 8वर्ष 5मा 3दि  
राहु

14/04/2025

19/09/2135

राहु	17/09/2033
गुरु	17/09/2049
शनि	17/09/2068
बुध	17/09/2085
केतु	17/09/2092
शुक्र	18/09/2112
सूर्य	18/09/2118
चन्द्र	18/09/2128
मंगल	19/09/2135

योगिनी

पिंगला 0वर्ष 11मा 7दि  
धान्या

22/03/2026

22/03/2029

धान्या	21/06/2026
भ्रामरी	21/10/2026
भद्रिका	22/03/2027
उल्का	21/09/2027
सिद्धा	21/04/2028
संकटा	20/12/2028
मंगला	20/01/2029
पिंगला	22/03/2029

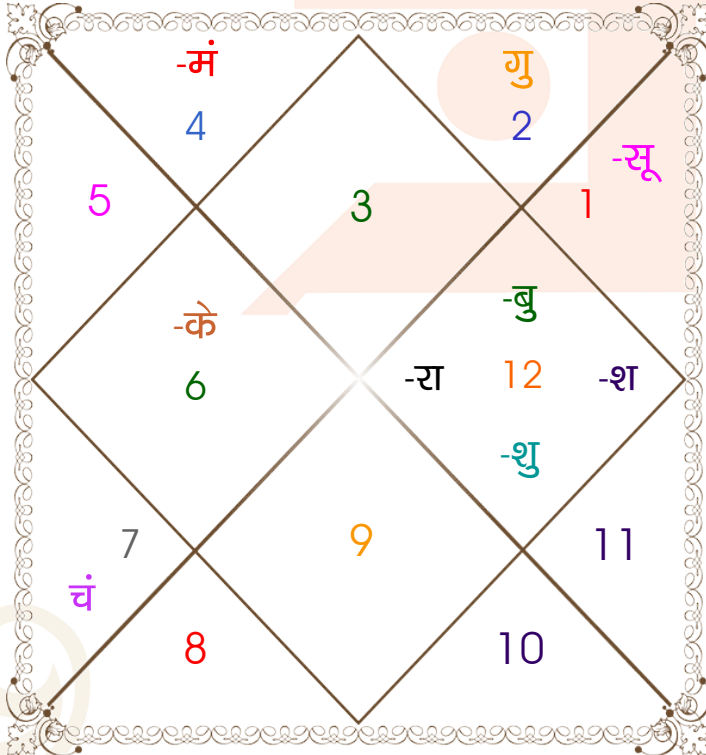
## ग्रह स्पष्ट तथा उनकी स्थिति

ग्रह	व	अ राशि	अंश	गति	नक्षत्र	पद	नं.	रा	न	अं.	स्थिति
लग्न		मिथु	28:13:08	317:57:40	पुनर्वसु	3	7	बुध	गुरु	शुक्र	---
सूर्य		मेष	00:20:07	00:58:46	अश्विनी	1	1	मंगल	केतु	केतु	उच्च राशि
चंद्र		तुला	13:45:26	11:49:49	स्वाति	3	15	शुक्र	राहु	बुध	सम राशि
मंगल		कर्क	04:12:10	00:23:44	पुष्य	1	8	चंद्र	शनि	शनि	नीच राशि
बुध		मीन	04:33:12	00:32:46	उ०भाद्रपद	1	26	गुरु	शनि	शनि	नीच राशि
गुरु		वृष	23:58:48	00:10:41	मृगशिरा	1	5	शुक्र	मंगल	मंगल	शत्रु राशि
शुक्र		मीन	00:26:37	00:02:52	पू०भाद्रपद	4	25	गुरु	गुरु	चंद्र	उच्च राशि
शनि		मीन	01:49:51	00:06:49	पू०भाद्रपद	4	25	गुरु	गुरु	राहु	सम राशि
राहु	व	मीन	03:02:54	00:04:26	पू०भाद्रपद	4	25	गुरु	गुरु	राहु	सम राशि
केतु	व	कन्या	03:02:54	00:04:26	उ०फाल्गुनी	2	12	बुध	सूर्य	शनि	शत्रु राशि
हर्ष		वृष	01:11:42	00:03:06	कृतिका	2	3	शुक्र	सूर्य	राहु	---
नेप		मीन	06:19:43	00:02:07	उ०भाद्रपद	1	26	गुरु	शनि	बुध	---
प्लूटो		मक	09:30:36	00:00:35	उत्तराषाढा	4	21	शनि	सूर्य	शुक्र	---
दशम भाव		मीन	22:28:07	--	रेवती	--	27	गुरु	बुध	चंद्र	--

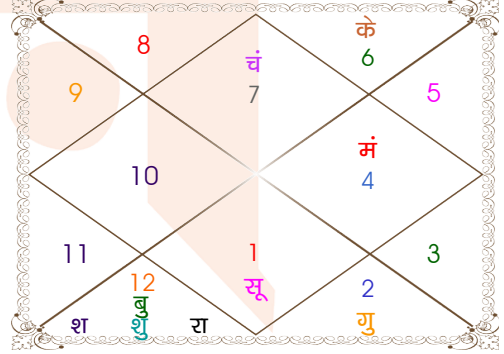
व - वकी स - स्थिर  
अ - अस्त पू - पूर्ण अस्त  
राहु : स्पष्ट

चित्रपक्षीय अयनांश : 24:12:37

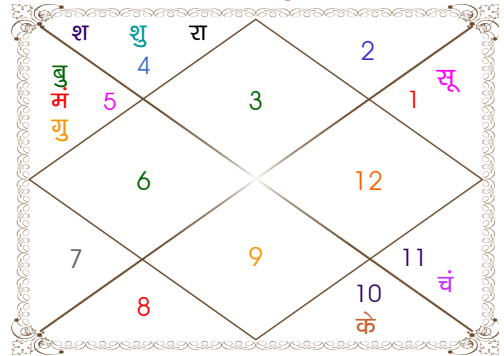
### लग्न-चलित



### चन्द्र कुंडली



### नवमांश कुंडली



## चलित तथा निरयण भाव चलित

### चलित अंश

भाव	भाव संधि	भाव मध्य
1	मिथुन 12:15:38	मिथुन 28:13:08
2	कर्क 12:15:38	कर्क 26:18:08
3	सिंह 10:20:38	सिंह 24:23:07
4	कन्या 08:25:37	कन्या 22:28:07
5	तुला 08:25:37	तुला 24:23:07
6	वृश्चिक 10:20:38	वृश्चिक 26:18:08
7	धनु 12:15:38	धनु 28:13:08
8	मकर 12:15:38	मकर 26:18:08
9	कुम्भ 10:20:38	कुम्भ 24:23:07
10	मीन 08:25:37	मीन 22:28:07
11	मेष 08:25:37	मेष 24:23:07
12	वृष 10:20:38	वृष 26:18:08

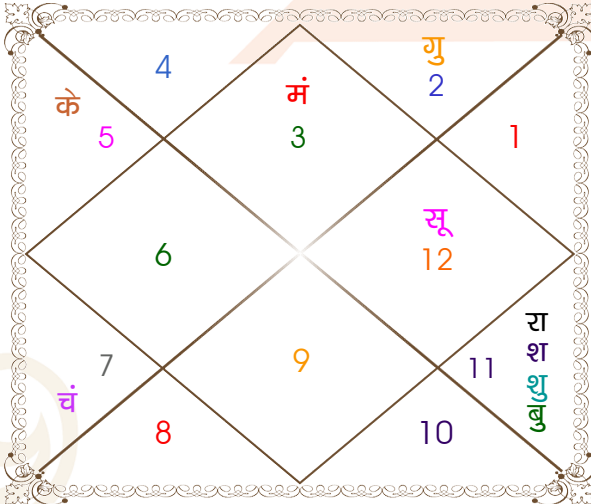
### निरयण भाव चलित

भाव	राशि	अंश
1	मिथुन	28:13:08
2	कर्क	22:53:59
3	सिंह	20:44:25
4	कन्या	22:28:07
5	तुला	25:59:44
6	वृश्चिक	28:14:20
7	धनु	28:13:08
8	मकर	22:53:59
9	कुम्भ	20:44:25
10	मीन	22:28:07
11	मेष	25:59:44
12	वृष	28:14:20

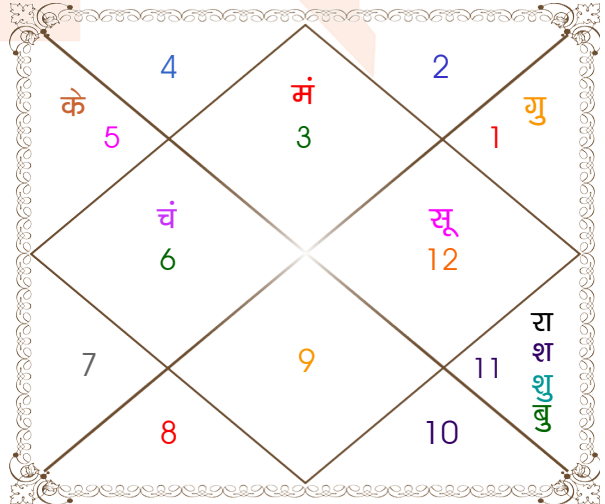
### तारा चक्र

जन्म	सम्पत	विपत	क्षेम	प्रत्यारि	साधक	वध	मित्र	अतिमित्र
स्वाति	विशाखा	अनुराधा	ज्येष्ठा	मूल	पूर्वाषाढा	उत्तराषाढा	श्रवण	धनिष्ठा
शतभिषा	पूर्वाभाद्रपद	उ०भाद्रपद	रेवती	अश्विनी	भरणी	कृत्तिका	रोहिणी	मृगशिरा
आर्द्रा	पुनर्वसु	पुष्य	आश्लेषा	मघा	पूर्वाफाल्गुनी	उ०फाल्गुनी	हस्त	चित्रा

### चलित कुंडली



### भाव कुंडली



## विंशोत्तरी दशा

भोग्य दशा काल : राहु 8 वर्ष 5 मास 3 दिन

राहु 18 वर्ष	गुरु 16 वर्ष	शनि 19 वर्ष	बुध 17 वर्ष	केतु 7 वर्ष
14/04/2025	17/09/2033	17/09/2049	17/09/2068	17/09/2085
17/09/2033	17/09/2049	17/09/2068	17/09/2085	17/09/2092
00/00/0000	गुरु 05/11/2035	शनि 20/09/2052	बुध 14/02/2071	केतु 13/02/2086
00/00/0000	शनि 19/05/2038	बुध 31/05/2055	केतु 11/02/2072	शुक्र 15/04/2087
14/04/2025	बुध 24/08/2040	केतु 09/07/2056	शुक्र 12/12/2074	सूर्य 21/08/2087
बुध 19/03/2026	केतु 30/07/2041	शुक्र 09/09/2059	सूर्य 18/10/2075	चंद्र 21/03/2088
केतु 06/04/2027	शुक्र 30/03/2044	सूर्य 21/08/2060	चंद्र 19/03/2077	मंगल 17/08/2088
शुक्र 06/04/2030	सूर्य 17/01/2045	चंद्र 22/03/2062	मंगल 16/03/2078	राहु 05/09/2089
सूर्य 01/03/2031	चंद्र 19/05/2046	मंगल 01/05/2063	राहु 02/10/2080	गुरु 12/08/2090
चंद्र 30/08/2032	मंगल 25/04/2047	राहु 07/03/2066	गुरु 08/01/2083	शनि 21/09/2091
मंगल 17/09/2033	राहु 17/09/2049	गुरु 17/09/2068	शनि 17/09/2085	बुध 17/09/2092

शुक्र 20 वर्ष	सूर्य 6 वर्ष	चंद्र 10 वर्ष	मंगल 7 वर्ष	राहु 18 वर्ष
17/09/2092	18/09/2112	18/09/2118	18/09/2128	19/09/2135
18/09/2112	18/09/2118	18/09/2128	19/09/2135	00/00/0000
शुक्र 17/01/2096	सूर्य 05/01/2113	चंद्र 20/07/2119	मंगल 14/02/2129	राहु 01/06/2138
सूर्य 17/01/2097	चंद्र 07/07/2113	मंगल 18/02/2120	राहु 05/03/2130	गुरु 24/10/2140
चंद्र 17/09/2098	मंगल 12/11/2113	राहु 19/08/2121	गुरु 08/02/2131	शनि 31/08/2143
मंगल 18/11/2099	राहु 07/10/2114	गुरु 19/12/2122	शनि 19/03/2132	बुध 15/04/2145
राहु 18/11/2102	गुरु 26/07/2115	शनि 19/07/2124	बुध 16/03/2133	00/00/0000
गुरु 19/07/2105	शनि 07/07/2116	बुध 18/12/2125	केतु 13/08/2133	00/00/0000
शनि 18/09/2108	बुध 13/05/2117	केतु 20/07/2126	शुक्र 13/10/2134	00/00/0000
बुध 20/07/2111	केतु 18/09/2117	शुक्र 19/03/2128	सूर्य 18/02/2135	00/00/0000
केतु 18/09/2112	शुक्र 18/09/2118	सूर्य 18/09/2128	चंद्र 19/09/2135	00/00/0000

- ❖ उपरोक्त दशा चंद्रमा के अंशो के आधार पर दी गई है। भयात भभोग के आधार पर दशा का भोग्यकाल राहु 8 वर्ष 5 मा 2 दि होता है।
- ❖ उपरोक्त तिथियां दशा के समाप्त होने का समय दर्शाती हैं। विंशोत्तरी दशा पूरे 120 वर्ष की बिना आयुनिर्णय के दी गई हैं।

## विंशोत्तरी दशा - प्रत्यन्तर

राहु - केतु	राहु - शुक्र	राहु - सूर्य	राहु - चंद्र	राहु - मंगल
19/03/2026	06/04/2027	06/04/2030	01/03/2031	30/08/2032
06/04/2027	06/04/2030	01/03/2031	30/08/2032	17/09/2033
केतु 10/04/2026	शुक्र 06/10/2027	सूर्य 22/04/2030	चंद्र 15/04/2031	मंगल 21/09/2032
शुक्र 13/06/2026	सूर्य 30/11/2027	चंद्र 20/05/2030	मंगल 17/05/2031	राहु 18/11/2032
सूर्य 02/07/2026	चंद्र 29/02/2028	मंगल 08/06/2030	राहु 08/08/2031	गुरु 08/01/2033
चंद्र 03/08/2026	मंगल 03/05/2028	राहु 27/07/2030	गुरु 20/10/2031	शनि 09/03/2033
मंगल 26/08/2026	राहु 14/10/2028	गुरु 09/09/2030	शनि 14/01/2032	बुध 03/05/2033
राहु 22/10/2026	गुरु 09/03/2029	शनि 31/10/2030	बुध 01/04/2032	केतु 25/05/2033
गुरु 12/12/2026	शनि 30/08/2029	बुध 17/12/2030	केतु 03/05/2032	शुक्र 28/07/2033
शनि 11/02/2027	बुध 01/02/2030	केतु 05/01/2031	शुक्र 02/08/2032	सूर्य 16/08/2033
बुध 06/04/2027	केतु 06/04/2030	शुक्र 01/03/2031	सूर्य 30/08/2032	चंद्र 17/09/2033
गुरु - गुरु	गुरु - शनि	गुरु - बुध	गुरु - केतु	गुरु - शुक्र
17/09/2033	05/11/2035	19/05/2038	24/08/2040	30/07/2041
05/11/2035	19/05/2038	24/08/2040	30/07/2041	30/03/2044
गुरु 30/12/2033	शनि 31/03/2036	बुध 13/09/2038	केतु 12/09/2040	शुक्र 09/01/2042
शनि 02/05/2034	बुध 09/08/2036	केतु 31/10/2038	शुक्र 08/11/2040	सूर्य 26/02/2042
बुध 21/08/2034	केतु 02/10/2036	शुक्र 18/03/2039	सूर्य 25/11/2040	चंद्र 19/05/2042
केतु 05/10/2034	शुक्र 05/03/2037	सूर्य 29/04/2039	चंद्र 24/12/2040	मंगल 14/07/2042
शुक्र 12/02/2035	सूर्य 20/04/2037	चंद्र 07/07/2039	मंगल 13/01/2041	राहु 08/12/2042
सूर्य 23/03/2035	चंद्र 07/07/2037	मंगल 24/08/2039	राहु 05/03/2041	गुरु 16/04/2043
चंद्र 27/05/2035	मंगल 29/08/2037	राहु 26/12/2039	गुरु 19/04/2041	शनि 18/09/2043
मंगल 11/07/2035	राहु 15/01/2038	गुरु 14/04/2040	शनि 12/06/2041	बुध 03/02/2044
राहु 05/11/2035	गुरु 19/05/2038	शनि 24/08/2040	बुध 30/07/2041	केतु 30/03/2044
गुरु - सूर्य	गुरु - चंद्र	गुरु - मंगल	गुरु - राहु	शनि - शनि
30/03/2044	17/01/2045	19/05/2046	25/04/2047	17/09/2049
17/01/2045	19/05/2046	25/04/2047	17/09/2049	20/09/2052
सूर्य 14/04/2044	चंद्र 26/02/2045	मंगल 08/06/2046	राहु 03/09/2047	शनि 10/03/2050
चंद्र 08/05/2044	मंगल 27/03/2045	राहु 29/07/2046	गुरु 29/12/2047	बुध 13/08/2050
मंगल 25/05/2044	राहु 08/06/2045	गुरु 12/09/2046	शनि 16/05/2048	केतु 16/10/2050
राहु 08/07/2044	गुरु 12/08/2045	शनि 05/11/2046	बुध 17/09/2048	शुक्र 17/04/2051
गुरु 16/08/2044	शनि 28/10/2045	बुध 23/12/2046	केतु 07/11/2048	सूर्य 11/06/2051
शनि 02/10/2044	बुध 05/01/2046	केतु 12/01/2047	शुक्र 02/04/2049	चंद्र 11/09/2051
बुध 12/11/2044	केतु 02/02/2046	शुक्र 10/03/2047	सूर्य 16/05/2049	मंगल 14/11/2051
केतु 29/11/2044	शुक्र 24/04/2046	सूर्य 27/03/2047	चंद्र 28/07/2049	राहु 26/04/2052
शुक्र 17/01/2045	सूर्य 19/05/2046	चंद्र 25/04/2047	मंगल 17/09/2049	गुरु 20/09/2052

## शुभाशुभ ज्ञानम्

शुभाशुभज्ञान आपको अपने मित्र एवं शत्रु वर्ग का बोध कराता है। मूलांक, भाग्यांक एवं मित्रांक से मित्रता एवं साझेदारी करने से लाभ तथा सहयोग की प्राप्ति होती है। साथ ही शुभ दिन एवं वर्ष उन्नति कारक तथा शुभ ग्रहों की दशाएं लाभदायक होती हैं। इसी प्रकार मित्रलग्न लाभदायक एवं मित्र राशि से घनिष्ठता होती है।

शुभरत्न धातु एवं रंग धारण करने से शारीरिक एवं मानसिक स्वस्थता बनी रहती है तथा भाग्य रत्न धारण करने से सौभाग्य में वृद्धि होती है। शुभ समय में कोई भी कार्य प्रारम्भ करने से उसमें इच्छित सफलता की प्राप्ति होती है। साथ ही इष्टदेव का ध्यान एवं जप से मानसिक शान्ति तथा सफलता मिलती है। शुभ पदार्थ अन्न, द्रव्य आदि का दान या व्यापार शुभ दिशा में करने से वांछित लाभ प्राप्त होता है। इस प्रकार शुभाशुभज्ञान का दैनिक जीवन में प्रयोग शुभफलदायक सिद्ध हो सकता है।

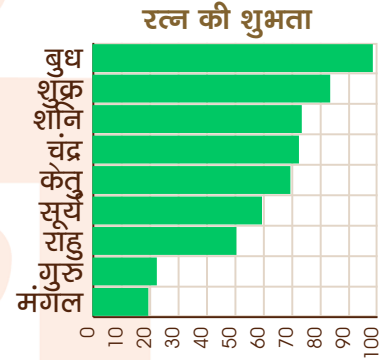
मूलांक	5
भाग्यांक	9
मित्र अंक	3, 5, 9
शत्रु अंक	2, 4, 8
शुभ वर्ष	23,32,41,50,59
शुभ दिन	बुध, शुक्र, शनि
शुभ ग्रह	बुध, शुक्र, शनि
मित्र राशि	मकर, मिथुन
मित्र लग्न	कन्या, कुम्भ, मेष
अनुकूल देवता	लक्ष्मी
शुभ रत्न	पन्ना
शुभ उपरत्न	संगपन्ना, मरगज
भाग्य रत्न	नीलम
शुभ धातु	कांसा
शुभ रंग	हरित
शुभ दिशा	उत्तर
शुभ समय	सूर्योदय के बाद
दान पदार्थ	हाथी दाँत, कपूर, फल
दान अन्न	मूँग
दान द्रव्य	घी

## रत्न चयन

रत्न जीवन में शुभत्व की वृद्धि के लिए धारण किए जाते हैं। वैज्ञानिक रूप से, रत्न अपने ग्रह की राशियों को पूर्णमात्रा में मानव शरीर में प्रवाहित कर ग्रह प्रभाव की वृद्धि करते हैं। यही कारण है कि रत्न केवल शुभ ग्रहों का ही धारण किया जाता है। ग्रह शुभ माना जाता है यदि यह लग्न, त्रिकोण या केन्द्र में स्थापित हो या स्वामी हो। यह अशुभ होता है यदि यह त्रिक भाव से संबंधित हो। मित्रों की युति या दृष्टि भी इसकी शुभता बढ़ाती है। बाधक भाव का स्वामित्व शुभता कम कर देता है। चर लग्नों में एकादश, स्थिर में नवम व द्विस्वभाव में सप्तम भाव की बाधक संज्ञा है। उपरोक्त तथ्य रत्न चयन हेतु ग्रह की शुभता दर्शाते हैं।

नीचे जन्मकुण्डली में ग्रहों की शुभता को सारणी व ग्राफ में दर्शित किया गया है। साथ ही कौन सा ग्रह किस क्षेत्र में कार्य सिद्ध कर सकता है दिया गया है। विभिन्न दशाओं में विभिन्न रत्नों की शुभता भी नीचे तालिका में दी गई है। जिस ग्रह को 75 प्रतिशत शुभता प्राप्त है उसके रत्न हमें सर्वदा बिना दशा विचार के धारण करने चाहिए। जिन्हें 50-75 प्रतिशत शुभता प्राप्त है उन्हें कार्य क्षेत्र अनुसार व अनुकूल दशा में धारण करना चाहिए। जो रत्न केवल 25-50 प्रतिशत शुभता लिए हैं उनके रत्न केवल उनकी या उनके मित्रों की दशा में धारण करने चाहिए। अन्ततः जिन्हें 25 प्रतिशत से भी कम शुभता प्राप्त है वे ग्रह अपने लिए अशुभ ही समझें और उनके रत्नों को पहनने से बचना चाहिए।

रत्न	ग्रह	शुभता	क्षेत्र
पन्ना	बुध	98%	व्यावसायिक उन्नति, स्वास्थ्य, सुख
हीरा	शुक्र	83%	व्यावसायिक उन्नति, कम खर्च, सन्तति सुख
नीलम	शनि	73%	व्यावसायिक उन्नति, दुर्घटना से बचाव, भाग्योदय
मोती	चंद्र	72%	सन्तति सुख, धन
लहसुनिया	केतु	69%	सुख, व्यावसायिक उन्नति
माणिक्य	सूर्य	59%	धनार्जन, पराक्रम
गोमेद	राहु	50%	व्यावसायिक उन्नति, कम खर्च
पुखराज	गुरु	22%	व्यय, दाम्पत्य कष्ट, व्यावसायिक हानि
मूंगा	मंगल	19%	धन हानि, हानि, शत्रु व रोग



### दशानुसार रत्न विचार

दशा	समाप्ति	माणिक्य	मोती	मूंगा	पन्ना	पुखराज	हीरा	नीलम	गोमेद	लहसुनिया
राहु	17/09/2033	44%	59%	0%	98%	22%	89%	80%	62%	56%
गुरु	17/09/2049	66%	78%	31%	86%	47%	70%	73%	50%	69%
शनि	17/09/2068	44%	59%	0%	100%	22%	89%	86%	56%	56%
बुध	17/09/2085	66%	59%	19%	100%	22%	89%	73%	50%	69%
केतु	17/09/2092	44%	59%	31%	98%	22%	89%	61%	25%	81%
शुक्र	18/09/2112	44%	59%	19%	100%	22%	95%	80%	56%	75%
सूर्य	18/09/2118	72%	78%	31%	98%	34%	70%	61%	25%	56%
चंद्र	18/09/2128	66%	84%	19%	100%	22%	83%	73%	25%	56%
मंगल	19/09/2135	66%	78%	44%	86%	34%	83%	73%	25%	75%

## साढ़ेसाती विचार

चंद्रमा से जन्म कुंडली में जब गोचरवश शनि की स्थिति द्वादश, प्रथम एवं द्वितीय स्थान में होती है तो साढ़ेसाती कहलाती है। शनि की चंद्रमा से चतुर्थ एवं अष्टम भाव में स्थिति होने पर ढैया शारीरिक, मानसिक या आर्थिक कष्ट देता है। लेकिन कई बार यह आश्चर्यजनक उन्नति भी प्रदान करती है। साढ़ेसाती का प्रभाव सात वर्ष एवं ढैया का प्रभाव ढाई वर्ष रहता है।

सामान्यतया साढ़ेसाती मनुष्य के जीवन में तीन बार आती है। प्रथम बचपन में द्वितीय युवावस्था में तथा तृतीय वृद्धावस्था में आती है। प्रथम साढ़ेसाती का प्रभाव शिक्षा एवं माता-पिता पर पड़ता है। द्वितीय साढ़ेसाती का प्रभाव कार्यक्षेत्र, आर्थिक स्थिति एवं परिवार पर पड़ता है परंतु तृतीय साढ़ेसाती स्वास्थ्य पर अधिक प्रभाव करती है।

निम्नलिखित तालिका में साढ़ेसाती का समय तथा प्रत्येक ढैया का शुभाशुभ फल इंगित किया गया है।

### प्रथम चक्र:

अष्टम स्थानस्थ ढैया	08/08/2029-05/10/2029 17/04/2030-31/05/2032 -----
साढ़ेसाती प्रथम ढैया	22/10/2038-05/04/2039 13/07/2039-28/01/2041 06/02/2041-26/09/2041
साढ़ेसाती द्वितीय ढैया	28/01/2041-06/02/2041 26/09/2041-11/12/2043 23/06/2044-30/08/2044
साढ़ेसाती तृतीय ढैया	11/12/2043-23/06/2044 30/08/2044-08/12/2046 -----
चतुर्थ स्थानस्थ ढैया	06/03/2049-10/07/2049 04/12/2049-25/02/2052 -----

### द्वितीय चक्र:

अष्टम स्थानस्थ ढैया	27/05/2059-11/07/2061 13/02/2062-07/03/2062 -----
साढ़ेसाती प्रथम ढैया	30/08/2068-04/11/2070 -----
साढ़ेसाती द्वितीय ढैया	04/11/2070-05/02/2073 31/03/2073-23/10/2073 -----
साढ़ेसाती तृतीय ढैया	05/02/2073-31/03/2073 23/10/2073-16/01/2076 11/07/2076-11/10/2076
चतुर्थ स्थानस्थ ढैया	15/01/2079-12/04/2081 03/08/2081-07/01/2082 -----

### तृतीय चक्र:

अष्टम स्थानस्थ ढैया	18/07/2088-31/10/2088 05/04/2089-19/09/2090 25/10/2090-21/05/2091
साढ़ेसाती प्रथम ढैया	11/10/2097-02/05/2098 20/06/2098-26/12/2099 17/03/2100-16/09/2100
साढ़ेसाती द्वितीय ढैया	26/12/2099-17/03/2100 16/09/2100-03/12/2102 -----
साढ़ेसाती तृतीय ढैया	03/12/2102-29/11/2105 -----
चतुर्थ स्थानस्थ ढैया	25/02/2108-29/07/2108 23/11/2108-17/02/2111 -----

### शनि का ढैया फल

ढैया के प्रकार	फल	क्षेत्र
अष्टम स्थानस्थ ढैया	सम	कम खर्च
साढ़ेसाती प्रथम ढैया	सम	सुख
साढ़ेसाती द्वितीय ढैया	शुभ	सन्तति सुख
साढ़ेसाती तृतीय ढैया	सम	शत्रु से कष्ट
चतुर्थ स्थानस्थ ढैया	सम	दुर्घटना से बचाव

## साढ़ेसाती के उपाय

शनि की साढ़ेसाती के अशुभ प्रभावों को कम करने के लिये दान, पूजन, व्रत, मंत्र आदि उपाय किये जा सकते हैं। इसके लिये शनिवार को काला कंबल, उड़द की दाल, काले तिल, चर्म-पादुका, काला कपड़ा, मोटा अनाज, तिल तथा लोहे का दान करना चाहिये। शनिदेव की पूजा एवं शनिवार का व्रत रखना चाहिये। उपवास के दिन उड़द की दाल से बनी वस्तु, चने, बेसन, काले तिल, काला नमक तथा फलों का ही सेवन करना चाहिये। साथ ही स्वयं या किसी योग्य पंडित के द्वारा शनि के निम्न मंत्र के 19000 जप संपन्न करवाने चाहिये।

**ॐ प्रां प्रीं प्रौं सः शनैश्चराय नमः ।।**

शनि की साढ़ेसाती में शारीरिक, मानसिक, पारिवारिक शांति एवं समृद्धि, आर्थिक सुदृढ़ता तथा कार्यक्षेत्र में उन्नति के लिये निम्नलिखित महामृत्युंजय मंत्र के 125000 जप स्वयं या किसी योग्य पंडित के द्वारा करवाने चाहिये।

**ॐ त्र्यंबकम यजामहे सुगन्धिं पुष्टिवर्धनम् ।  
उर्वारुकमिव बन्धनान्मृत्योर्मुक्षीय मामृतात् ।।**

वैकल्पिक रूप से निम्नलिखित मंत्र के प्रतिदिन 108 जप किये जा सकते हैं।

**ॐ हों जूं सः ॐ भूर्भुव स्वः ॐ ।।**

शनि की साढ़ेसाती के शुभत्व को बढ़ाने के लिये शनिवार के दिन आप 5 1/4 रत्ती का नीलम रत्न पंचधातु में (सोना, चांदी, तांबा, लोखंड, जस्ता) या घोड़े की नाल या नाव की कील से निर्मित लोहे की अंगूठी धारण करें। लोहे की अंगूठी आप दाएं हाथ की मध्यमा अंगुली में धारण करें।

अंगूठी शुक्ल पक्ष की शनिवार की सायं सूर्यास्त के समय धारण करें। पुष्य, अनुराधा या उत्तरा भाद्रपद नक्षत्र अति शुभ हैं। उस दिन शनिवार का उपवास भी करना चाहिए। अंगूठी धारण करने से पूर्व इसे शुद्ध दूध एवं गंगाजल में स्नान कराना चाहिए तथा धूप आदि जलाकर शनि का पूजन करना चाहिए एवं निम्न मंत्र की एक माला या 108 बार जप करना चाहिए। नीलम मध्यमा उंगली में या गले में पेन्डेंट बनाकर धारण करें।

**ॐ शं शनैश्चराय नमः ।**

अंगूठी धारण करने के पश्चात शनि की वस्तुओं का दान देना चाहिए। इससे शनि के अशुभ प्रभाव में कमी आयेगी तथा आपकी सुख शांति एवं समृद्धि में वृद्धि होगी।

श्री हनुमान चालीसा एवं श्री हनुमान अष्टक का पाठ करना श्रेष्ठ है।

## मांगलिक विचार

जब वर या कन्या की कुंडली में मंगल लग्न, चतुर्थ, सप्तम, अष्टम तथा द्वादश भाव में हो तो मांगलिक दोष कहलाता है। यथोक्तम्

**लग्ने व्यये च पाताले जामित्रे चाष्टमे कुजे ।  
स्त्री भर्तुर्विनाशं च भर्ता च स्त्री विनाशनम् ।।**

मांगलिक दोष लग्न से अधिक प्रबल माना जाता है लेकिन चन्द्रमा से इसका दोष लग्न की अपेक्षा अल्प होता है। यदि शास्त्रानुसार वर एवं कन्या का मांगलिक दोष भंग हो जाता है तो उनका दाम्पत्य जीवन सुख एवं प्रसन्नतापूर्वक व्यतीत होता है। इसके विपरीत बिना दोष भंग हुए मांगलिक वर-कन्याओं को जीवन में कई प्रकार की अनावश्यक समस्याओं तथा व्यवधानों का सामना करना पड़ता है। अतः विवाह से पूर्व शुद्ध कुण्डली मिलान से इस दोष का उचित निवारण करके ही दाम्पत्य जीवन प्रारम्भ करना चाहिए जिससे जीवन में शान्ति तथा सम्पन्नता बनी रहे।

\*\*\*\*\*

आपकी जन्म कुंडली में मंगल की स्थिति द्वितीय भाव में है। कुंडली में यह भाव मुख्य रूप से वाणी तथा कुटुम्ब का प्रतिनिधित्व करता है। अतः मंगल के प्रभाव से आपकी पारिवारिक सुख शान्ति तथा समृद्धि मध्यम रहेगी तथा यदा कदा पारिवारिक जनों में मतभेद का वातावरण बन सकता है। इसी कारण दक्षिण भारत में इसे कुज दोष भी माना जाता है। आपकी वाणी में भी ओजस्विता का भाव रहेगा तथा लोग आपसे प्रभावित रहेंगे। धनार्जन के लिए यह स्थिति उत्तम रहेगी तथा स्वपरिश्रम एवं पराकम से आप इच्छित धन एवं सुख संसाधनों को अर्जित करके पारिवारिक जनों को सन्तुष्ट करने में समर्थ रहेंगे।

कुंडली में द्वितीय भावस्थ मंगल की पंचम भाव पर दृष्टि से पुत्र संतति से आप युक्त रहेंगे तथा जीवन में उनसे आपको पूर्ण सुख एवं सहयोग प्राप्त होगा लेकिन संतति प्राप्ति में किंचित विलम्ब हो सकता है साथ ही उच्च शिक्षा अर्जित करने में भी आप सफल रहेंगे। अष्टम भाव पर मंगल की दृष्टि के प्रभाव से शारीरिक स्वास्थ्य सामान्यतया अच्छा रहेगा। यदा कदा पित या गर्मी से कोई परेशानी हो सकती है लेकिन इसका कोई दुष्प्रभाव नहीं होगा। शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्य यथा समय सिद्ध होंगे। नवम भाव पर मंगल की दृष्टि के प्रभाव से आप अपने कार्यों एवं पराकम से भाग्य का निर्माण करेंगे। जीवन में उन्नति के पथ पर अग्रसर रहेंगे साथ ही आप भाग्य वादी न होकर कर्म करने में विश्वास रखेंगे।

इस प्रकार आप द्वितीय भावस्थ मंगल के प्रभाव से पारिवारिक सुख शान्ति तथा समृद्धि को बनाएं रखेंगे तथा पारिवारिक जनों का उचित रूप से पालन करेंगे साथ ही वे भी आपको यथोचित सुख एवं सहयोग प्रदान करेंगे। इसके अतिरिक्त अपने दाम्पत्य जीवन को सुखी बनाने के लिए आपको किसी गैर मांगलिक कन्या से विवाह करना चाहिए। जिससे आप प्रसन्नता पूर्वक जीवन में सुखों का उपभोग करेंगे तथा एक दूसरे को सहयोग प्रदान करके

मानसिक सन्तुष्टि प्राप्त करेंगे।



## कालसर्प योग

अग्रे राहुरधः केतुः सर्वे मध्यगताः ग्रहाः ।  
योगाऽयं कालसर्पाख्यो शीघ्रं तं तु विनाशय ॥

आगे राहु हो एवं नीचे केतु मध्य में सभी (सातों) ग्रह विद्यमान हो तो कालसर्प योग बनता है। अतः इस योग से ग्रसित जातकों के लिए आवश्यक है कि वे इस काल सर्प योग का निदान करा लें। जिससे कि कुंडली के शुभ योगों के फल पूर्णयता मिलते रहें।

द्वादश भावों में राहु की स्थिति के अनुसार काल सर्प योग मुख्यतः द्वादश प्रकार के होते हैं। वे हैं-

1. अनंत, 2. कुलिक, 3. वासुकि, 4 शङ्खपाल, 5. पद्म, 6. महापद्म, 7. तक्षक, 8. कर्कोटक, 9. शङ्खचूड, 10. घातक, 11. विषधर, 12. शेषनाग।

यह योग उदित अनुदित भेद से दो प्रकार के होते हैं राहु के मुख में सभी सातों ग्रह ग्रसित हो जाएं तो उदित गोलाद्ध नामक योग बनता है एवं राहु की पृष्ठ में यदि सभी ग्रह हों तो अनुदितन गोलाद्ध नामक योग बनता है।

यदि लग्न कुंडली में सभी सातों ग्रह राहु से केतु के मध्य में हो लेकिन अंशानुसार कुछ ग्रह राहु केतु की धुरी से बाहर हों तो आंशिक काल सर्प योग कहलाता है। यदि कोई एक ग्रह राहु-केतु की धुरी से बाहर हो तो भी आंशिक काल सर्प योग बनता है।

यदि राहु से केतु तक सभी भावों में कोई न कोई ग्रह स्थित हो तो यह योग पूर्ण रूप से फलित होता है। यदि राहु-केतु के साथ सूर्य या चंद्र हो तो यह योग अधिक प्रभावशाली होता है। यदि राहु, सूर्य व चंद्र तीनों एक साथ हो तो ग्रहणकाल सर्प योग बनता है। इसका फल हजार गुना अधिक हो जाता है। ऐसे जातक को काल सर्प योग की शांति करवाना अति आवश्यक होता है।

### काल सर्प योग का प्रभाव

इस योग में उत्पन्न जातक को मानसिक अशांति, धनप्राप्ति में बाधा, संतान अवरोध एवं गृहस्थी में प्रतिपल कलह के रूप में प्रकट होता है। प्रायः जातक को बुरे स्वप्न आते हैं। कुछ न कुछ अशुभ होने की आशंका मन में बनी रहती है। जातक को अपनी क्षमता एवं कार्यकुशलता का पूर्ण फल प्राप्त नहीं होता है, कार्य अक्सर देर से सफल होते हैं। अचानक नुकसान एवं प्रतिष्ठा की क्षति इस योग के लक्षण हैं।

जातक के शरीर में वात पित्त त्रिदोषजन्य असाध्य रोग अकारण उत्पन्न होते हैं। ऐसे रोग जो प्रतिदिन क्लेश (पीडा) देते हैं तथा औषधि लेने पर भी ठीक नहीं होते हों, काल सर्प योग के कारण होते हैं।

काल सर्प योग के औपचारिक उपाय के द्वारा इन कष्टों से राहत एवं छुटकारा प्राप्त किया जा सकता है। जन्मपत्रिका के अनुसार जब-जब राहु एवं केतु की महादशा, अंतर्दशा आदि

आती है तब तब यह योग असर दिखाता है। गोचर में राहु व केतु का जन्मकालिक राहु-केतु व चंद्र पर भ्रमण भी इस योग को सक्रिय कर देता है। उस समय विशेष ध्यान देकर पूजा अर्चनादि श्रद्धा विश्वास के साथ करें, अवश्य लाभ होगा। कालसर्प योग यंत्र के सम्मुख 43 दिन तक सरसों के तेल का दीया जलाने से भी इन कष्टों से राहत एवं छुटकारा प्राप्त किया जा सकता है।

### जातक पर काल सर्प योग का प्रभाव

आपकी जन्मकुण्डली में घातक नामक कालसर्प योग केवल अनुदित रूप में विद्यमान है। अनुदित योग पूर्णरूप से कालसर्प योग की परिभाषा में नहीं आता, लेकिन फिर भी इसका कुछ फल अवश्य मिलता है। परिणामस्वरूप जातक जन्म से ही परिवार से अलग रहता है। माता-पिता का स्नेह अधिक नहीं मिलता है। जातक के अनेक शत्रु होते हैं। वे समय-समय पर नुकसान पहुँचाते रहते हैं। नाना-नानी या दादा-दादी का प्रायः वियोग होता है। इस योग के प्रभाव से सन्तान कभी अस्वस्थ हो जाते हैं और जातक चिन्ता व परेशानी के घेरे में आ जाता है।

इस योग के प्रभाव से जातक को व्यापार व्यवसाय में थोड़ा बहुत नुकसान उठाना पड़ता है। नौकरी व्यवसाय में भी कभी कुछ व्यवधान उपस्थित हो जाता है पर कालान्तर में वह स्वतः नष्ट हो जाता है। जातक को भागीदारी में मनमुटाव की स्थिति पैदा हो जाती है और सरकारी अधिकारियों से कभी अनबन भी हो जाती है।

इस योग के कारण जातक का वैवाहिक जीवन सामान्य होते हुए भी कभी-कभी अशान्त या कष्टमय हो जाता है। घर में सुख-शान्ति का थोड़ा बहुत अभाव रहता है। सुख-प्राप्ति के लिए विशेष रूप से संघर्ष करना पड़ता है और मित्र गण समय पर धोखा दे जाते हैं। परिणामस्वरूप जातक को आंशिक रूप में नुकसान उठाना पड़ता है। आय में कमी रहती है। फलस्वरूप आर्थिक संकट समय-समय पर घेर लेता है। लेकिन इतना सब कुछ होने के बाद भी जातक के जीवन में एक अच्छा समय आता है जिसमें जातक को विशेष रूप से प्रसिद्धि मिलती है।

यदि आप कभी उपरोक्त परेशानी महसूस करते हैं तो निम्नलिखित उपाय करें, अवश्य लाभ मिलेगा।

1. काल सर्प दोष निवारण यंत्र घर में स्थापित करके, इसका नियमित पूजन करें।
2. बहते पानी में नारियल के फल को तीन बार शुभ मुहूर्त में प्रवाहित करें।
3. बहते पानी में कोयला को शुभ मुहूर्त में तीन बार प्रवाहित करें।
4. हरिजन को मसूर की दाल तथा द्रव्य शुभ मुहूर्त में तीन बार दान करें।
5. हनुमान चलीसा का 108 बार पाठ करें।
6. शयन कक्ष में लाल रंग के पर्दे, चादर तथा तकियों का उपयोग करें।
7. कुल देवता की पूजा करें।
8. धूम्रवस्त्र, तिल, कम्बल एवं सप्तधान्य शुभ मुहूर्त में रात्रि को दान करें।
9. केतु की उपासना उसकी महादशा में अवश्य करें।
10. देवदारु, सरसों तथा लोहवान को उबाल कर एक बार स्नान करें।

11. सवा महीने जौ के दाने पक्षियों को खिलाएँ।
12. नीला रुमाल, नीला घड़ी का पट्टा, नीला पैन्, लोहे की अंगूठी धारण करें।

#### विशेष

ध्यान रखें कालसर्पयोग का पूजन केवल श्रीखण्ड चन्दन से करें। कुंकुम, सिन्दूर, रोली आदि का प्रयोग न करें। तिरुपति बालाजी के पास कालाहस्ती शिव मंदिर में जाकर कालसर्प योग की शांति का उपाय विधि-विधान से एक बार करें अथवा 12 ज्योतिर्लिंग में से किसी भी ज्योतिर्लिंग में जाकर पूजा करें जैसे - कि सौराष्ट्र गुजरात में सोमनाथ मंदिर, महाराष्ट्र के नासिक में त्रयंबकेश्वर मंदिर, उज्जैन, भीमाशंकर, नागेश्वर, रामेश्वर, वगैरे।



# पितृदोष विचार

## पितृदोष क्या है ?

हमारे पूर्वज या परिवार के सदस्य मृत्योपरान्त पितृ संज्ञा प्राप्त करते हैं। पितृ हमारे और भगवान के बीच की कड़ी होते हैं। यदि ये प्रसन्न होते हैं तो जातक सुखी जीवन भोगता है, लेकिन यदि किसी कारणवश ये अप्रसन्न हो जाते हैं तो जातक को अनेक प्रकार की व्याधियाँ व कष्ट झेलने पड़ते हैं।

कालांतर में पितृ या तो मोक्ष को प्राप्त करते हैं, या पृथ्वी लोक पर पुनः जन्म ले लेते हैं। यदि परिवार के सभी पितरों का पुनर्जन्म या मोक्ष हो गया हो तो कुछ समय के लिए उस परिवार के कोई पितृ नहीं होते। ऐसे में जातक सुख दुख अपनी कुंडली अनुसार प्राप्त करता है। अतः परिवार के सदस्यों को चाहिए कि जब तक वे पितृ लोक में हैं तब तक तर्पणादि से उनकी सेवा करें। यदि पितृ प्रसन्न रहते हैं तो आशीर्वाद स्वरूप जातक चहुमुखी प्रगति प्राप्त करता है।

पितृ अप्रसन्न, दुःखी एवं अतृप्त होते हैं यदि किसी पूर्वज की अंतिम इच्छा पूर्ण न हुई हो, या किसी के द्वारा श्रापित हों या असामयिक मृत्यु हो गई हो। पितृ योनि में रहते हुए भी उन्हें भोजन की आवश्यकता होती है। यदि परिवार के सदस्य तर्पणादि द्वारा भोजन नहीं देते हैं तो वे भूख से व्याकुल हो जाते हैं। पितृ विभिन्न प्रकार के कष्टों की अनुभूति करते हैं जब तक कि जातक पितरों की शांति हेतु पूजन-पाठ, पिंडदान, तर्पण आदि न करे।

पितृ दोष अपने कर्मों के कारण न हो करके, अपने माता-पिता या पूर्वजों के कर्मों के कारण होते हैं, क्योंकि यह दोष तो जातक के जन्म से जन्मपत्री में विद्यमान होता है जबकि कर्म तो जन्म के बाद ही बनते हैं। अतः पितृदोष ऐसा दोष है जिसका कोई कारण समझ में नहीं आता, केवल लक्षण दर्शित होते हैं। जन्मपत्री में भी शुभ दशा व गोचर के योग होते हुए भी हमें हमारे कर्मों का फल प्राप्त नहीं होता, या घर में सदैव कलह, अशांति, धन की कमी व बीमारी लगी रहती है। संतान नहीं होती या संतान विक्षिप्त होती है, बच्चों के विवाह में अड़चन आती है या उनके विकास में अवरोध आते हैं। अतः जब भी किसी प्रकार की समस्या बार-बार आती है एवं कोई कारण नजर न आता हो तो हमें पितृ दोष की शांति करवानी चाहिए जब तक कि वातावरण और परिस्थितियां अनुकूल न हो जाएं।

## पितृदोष लक्षण

1. परिवार में आकस्मिक मृत्यु या दुर्घटना होना।
2. आनुवांशिक बीमारी होना और लंबी अवधि तक बीमारी का चलना।
3. परिवार में शारीरिक रूप से विकलांग या अनचाहे बच्चे का जन्म होना।
4. परिवार में बच्चों द्वारा असम्मान या प्रताड़ना का व्यवहार करना।
5. गर्भ धारण न होना या गर्भपात होना।
6. परिवार के किसी सदस्य का विवाह न होना।

7. परिवार में किसी बात को लेकर झगड़ा-फसाद होना।
8. कभी खत्म न होने वाली गरीबी परिवार में हो जाना।
9. बुरी आदतों की लत लग जाना।
10. परिवार में बार-बार केवल कन्या संतान का जन्म होना।
11. शिक्षा में बाधाएं आना।
12. स्वप्न में सांप दिखाई देना।
13. माथे पर गंदी करतूतों का कलंक लगना।
14. परिवार में किसी बुजुर्ग के बाल सफेद होने के पश्चात पीले होने लगना या काली खांसी होना।
15. परिवार के किसी सदस्य को स्वप्न में पूर्वज द्वारा खाना या कपड़े मांगते हुए दिखना।

### पितृ की पहचान :

1. श्रीमद् भगवद् गीता के ग्यारहवें अध्याय का पाठ करें तो आपको कुछ दिनों में ही स्वप्न में पितृ दर्शन होंगे।
2. रात को सोने से पहले हाथ पैर धोकर अपने मन में अपने पितृ से प्रार्थना करें कि जो भी मेरे पितृ हैं वे मुझे दर्शन दें।
3. यदि आपका कोई कार्य अटक रहा है तो अपने पितृ को याद कीजिए और उन्हें कहें कि यदि आप हैं तो मेरा अमुक कार्य हो जाए। मैं आपके लिए शांति पाठ कराउंगा। आपकी ऐसी प्रार्थना से कार्य सिद्धि हो जाने पर यह प्रमाणित हो जाएगा कि आपको पितृ शांति करवानी चाहिए।

### पितृ दोष उपाय :

1. श्राद्ध पक्ष में मृत्यु तिथि के दिन तर्पण व पिंडदान करें। ब्राह्मण को भोजन कराएं व वस्त्र/दक्षिणा आदि दें।
2. यदि मृत्युतिथि न मालूम हो तो श्राद्ध पक्ष की अमावस्या के दिन तर्पण व पिंडदानादि कर्म करें।
3. प्रत्येक अमावस्या विशेषतः सोमवती अमावस्या को पितृभोग दें। इस दिन गोबर के कंडे जलाकर उसपर खीर की आहुति दें। जल के छींटे देकर हाथ जोड़ें व पितृ को नमस्कार करें।
4. सूर्योदय के समय सूर्य को जल दें व गायत्री मंत्र का जप करें।
5. पीपल के पेड़ पर जल, पुष्प, दूध, गंगाजल व काले तिल चढ़ाकर पितृ को याद करें, माफी और आशीष मांगें।
6. रविवार के दिन गाय को गुड़ या गेहूं खिलाएं।
7. लाल किताब के अनुसार परिवार में जहां तक खून का रिश्ता है जैसे दादा, दादी, माता, पिता, चाचा, ताया, बहन, बेटी, बुआ, भाई सबसे बराबर-बराबर धन, 1, 5 या दस रुपए लेकर मंदिर में दान करने से पितृ ऋण से मुक्ति मिलती है।
8. हरिवंश पुराण का श्रवण और गायत्री जप पितृ शांति के लिए लोकप्रसिद्ध है।
9. गया या त्र्यंबकेश्वर में त्रिपिंडी श्राद्ध या नन्दी श्राद्ध करें।
10. नारायणबलि पूजा करवाएं।

11. पितृ गायत्री का अनुष्ठान करवाएं -

**ॐ देवताभ्य पितृभ्यश्च महायोगिभ्येव च ।**

**नमः स्वाहायै स्वधायैः नित्यमेव नमो नमः ॥**

12. पितृ दोष निवारण उपायों में गया में पिंडदान, गया श्राद्ध तथा पितृ भोग अर्पण आदि क्रियाएं करते हुए उपरोक्त पितृ गायत्री मंत्र का उच्चारण करना चाहिए ।

13. श्री कृष्ण मुखामृत गीता का पाठ करें ।

### **पितृ पूजा के लिए आवश्यक निर्देश :**

1. पितरों को मांस वाला भोजन न अर्पित करें ।
2. पूजा के दिन स्वयं भी मांस भक्षण न करें ।
3. पितृ पूजा में स्टील, लोहा, प्लास्टिक, शीशे के बर्तन का प्रयोग न करें । मिट्टी या पत्तों के बर्तनों का ही प्रयोग करें ।
4. पितृ पूजा में घंटी न बजाएं ।
5. पितृ पूजा करने वाले व्यक्ति की पूजा में व्यवधान न डालें ।
6. बुजुर्गों का सम्मान करें ।
7. पितरों के निमित्त किये जाने वाले गौ-दान से पितृ तृप्त होते हैं ।
8. घर में पीने का पानी रखा जाता है उस स्थान पर विशेष पवित्रता रखें । यह स्थान पितृ का स्थान माना जाता है ।
9. पितृ कर्म हेतु साल में 12 मृत्यु तिथि, 12 अमावस्या, 12 पूर्णिमा, 12 संक्रांति, 12 वैधृति योग, 24 एकादशी व श्राद्ध के 15 दिन मिलाकर कुल 99 दिन होते हैं ।

### **आपकी कुण्डली में पितृदोष**

- पंचम भाव के स्वामी पर शनि और राहु का प्रभाव है ।
- नवम भाव का स्वामी शनि है तथा उस पर राहु का प्रभाव है ।
- लग्नेश शनि व राहु दोनों से प्रभावित है ।

आपकी कुण्डली में बुध, शुक्र और शनि के कारण पितृदोष है ।

आपकी कुण्डली में बुध पितृदोष कारक ग्रह है अतः परिवार के किसी महिला सदस्य द्वारा बच्चों पर किये गये पापकर्म आपके पितृदोष का कारण है । इस दोष के निवारणार्थ आप बहन, बुआ तथा मौसी की सेवा करके आशीर्वाद लें तथा तोते को हरी मिर्च खिलाकर पिंजड़े से मुक्त कर दें ।

आपकी कुण्डली में शुक्र पितृदोष कारक ग्रह है अतः परिवार के किसी महिला पूर्वज द्वारा किये गये पापकर्म आपके पितृदोष का कारण है । इस दोष के निवारणार्थ गरीब या जरूरतमंद स्त्रियों, कन्याओं को तथा पत्नी को दान दें । 11 वर्ष से छोटी 9 कन्याओं को मंदिर में खीर खिलायें ।

आपकी कुंडली में शनि पितृदोष कारक ग्रह है अतः परिवार के किसी पुरुष सदस्य द्वारा दलित पर किये गये पापकर्म आपके पितृदोष का कारण है। इस दोष के निवारणार्थ भगवान रुद्र की पूजा करें। पीपल को जल चढ़ायें व पूजा करें। शम्मी की समिधा से हवन करें। बकरी व शनि प्रीतकारी वस्तुओं का दान करें। गरीब या जरूरतमंदों की सहायता के रूप में दान दें तथा कौए को खाने का पहला ग्रास खिलायें।

आपकी कुंडली में पितृदोष का योग है परंतु यदि आपको अपने जीवन में उपरोक्त वर्णित पितृदोष लक्षण में से किसी प्रकार का कष्ट या परेशानी की अनुभूति नहीं हो रही है तो आपको पितृदोष संबंधी उपाय करने की आवश्यकता नहीं है। संभव है कि किसी शुभकार्य के कारण आपके पितृ प्रसन्न हो गए हों व आपको उनकी कृपा प्राप्त हो रही हो या वे मोक्ष को प्राप्त हो गए हों।

### नोट :

त्रिपिण्डी श्राद्ध एवं नारायण नाग बली पितृदोष के लिए मुख्य उपाय हैं। यह स्रयंबकेश्वर में विशेष रूप से कराये जाते हैं। त्रिपिण्डी श्राद्ध में आटे को पानी में मांढ़ कर पुतले के रूप में पूर्वजों के प्रतीकात्मक पिंड बना लिये जाते हैं, उन पर मंत्रों का पाठ किया जाता है। अंत में अस्थि विसर्जन के समान उनको जल में प्रवाह कर दिया जाता है।

नारायण नागबलि, पूर्वजों के मोक्ष व उनकी इच्छा पूर्ति के लिए कराया जाता है। इसमें दो दिन श्मशान क्रिया होती है व तीसरे दिन मांगलिक पूजा की जाती है। यदि पितृदोष के कारण संतान बाधा या विवाह बाधा आदि होती है तो इस उपाय के पश्चात जातक बाधामुक्त हो जाता है और काम स्वतः बनने लगते हैं।

## ग्रह फल

### सूर्य

ग्यारहवें भाव में सूर्य हो तो जातक धनी, बलवान्, सुखी, स्वाभिमानी, तपस्वी, मितभाषी, सदाचारी, योगी, अल्पसन्तति एवं उदररोगी होता है।

मेष राशि में रवि हो तो जातक उदार, गम्भीर, शूरवीर, आत्मबली स्वाभिमानी, प्रतापी, चतुर, पित्तविकारी, युद्धप्रिय, साहसी एवं महत्वाकांक्षी होता है।

आपके जन्म समय में सूर्य एकादश भाव में स्थित है अतः आप पिता के हमेशा प्रिय रहेंगे। उनका स्वास्थ्य भी अच्छा रहेगा परन्तु यदा कदा सामान्य रूप से वे शारीरिक व्याकुलता की अनुभूति भी करेंगे। धनैश्वर्य एवं सम्मान से वे हमेशा युक्त रहेंगे एवं जीवन में आपको सर्वप्रकार के शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यों में अपना वांछित आर्थिक तथा अन्य प्रकार से सहयोग प्रदान करते रहेंगे। साथ ही आपके धनार्जन के साधनों की उन्नति में भी वे आपको प्रायः सहयोग तथा निर्देश प्रदान करते रहेंगे।

आपकी भी उनके प्रति पूर्ण सम्मान की भावना रहेगी एवं उनकी आज्ञा का अनुपालन करने के लिए सर्वदा तत्पर रहेंगे। आपके परस्पर संबंध मधुर रहेंगे तथा यदा कदा सैद्धान्तिक मतभेद भी उत्पन्न होंगे। आप जीवन में उनको हमेशा वांछित सहयोग तथा सहायता प्रदान करते रहेंगे एवं अपनी ओर से उन्हें किसी भी प्रकार से कष्टानुभूति नहीं होने देंगे।

### चन्द्र

पंचमभाव में चन्द्रमा हो तो जातक सदाचारी, कन्यासन्ततिवान्, चंचल सट्टे से धन कमानेवाला एवं क्षमाशील होता है।

तुला राशि में चन्द्रमा हो तो जातक दीर्घदेही, आस्तिक, अन्नदाता, धनवान्, जमींदार, कुशाबुद्धिवाला, चतुर, उच्चाकांक्षाओं से रहित, सन्तोषी एवं परोपकारी होता है।

आपके जन्म काल में चन्द्रमा की स्थिति पंचम भाव में हैं। अतः आपकी माता का स्वास्थ्य अच्छा रहेगा एवं आयु भी दीर्घ होगी। आपके शुभ प्रभाव से वे धन सम्पत्ति आदि को भी प्राप्त करेंगी तथा इससे प्रायः युक्त ही रहेंगी। साथ ही जीवन में आपको हमेशा कला, नीति, विद्या आदि के लिए प्रोत्साहित करेंगी एवं यत्नपूर्वक इसमें अपना सहयोग भी प्रदान करेंगी। आप की संतति से भी उनका प्रेम रहेगा एवं जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में आपको सहयोग प्रदान करेंगी।

आप भी उनके प्रिय रहेंगे तथा उनकी आज्ञापालन करने के लिए तत्पर रहेंगे। साथ ही आपके आपसी संबंध भी मधुरता से युक्त रहेंगे एवं आपसी भेदभाव भी अल्प मात्रा में होंगे। जीवन में आप यत्नपूर्वक उनकी सेवा तथा अन्य वांछित सहयोग एवं सहायता प्रदान करने के लिए भी सर्वदा उद्यत रहेंगे इस प्रकार आप आपस में प्रसन्नतापूर्वक रहेंगे।

## मंगल

द्वितीय भाव में मंगल हो तो जातक कटुभाषी, नेत्रकर्ण रोगी, कटुतिक्त रसप्रिय, धर्मप्रेमी, चोर से भक्ति, कुटुम्ब क्लेश वाला, पशुपालक, निर्बुद्धि एवं निर्धन होता है।

कर्क राशि में मंगल हो तो जातक कुशाबुद्धिवाला, धनवान्, बदमाश, कुशलचिकित्सक, या सर्जन, चंचलमनवाला सुखाभिलाषी, कृषक, रोगी एवं दुष्ट होता है।

आप के जन्म काल में मंगल द्वितीय भाव में स्थित है अतः आपके भाई बहिनों का स्वास्थ्य मध्यम रहेगा एवं यदा कदा वे शारीरिक रूप से व्याकुलता की अनुभूति भी करते रहेंगे। आपके प्रति उनके मन में पूर्ण स्नेह भाव विद्यमान रहेगा। धनार्जन एवं विद्यार्जन संबंधी कार्यों में वे आपको पूर्ण सहयोग प्रदान करेंगे। साथ ही जीवन में अन्य महत्वपूर्ण एवं शुभ कार्यों में भी आपको उनका पूर्ण सहयोग एवं सद्भाव प्राप्त होगा।

आपके मन में भी उनके प्रति पूर्ण स्नेह की भावना रहेगी। आपके आपसी संबंध मधुर होंगे परन्तु यदा कदा उनमें आपसी मतभेदों के कारण अनिश्चित काल के लिए कटुता या तनाव का वातावरण होगा। जीवन में आप हमेशा भाई बहिनों का सुख दुःख में ध्यान रखेंगे तथा अपनी ओर से हमेशा उन्हें पूर्ण आर्थिक एवं अन्य रूप में सहयोग प्रदान करते रहेंगे।

## बुध

दशमभाव में बुध हो तो जातक सत्यवादी, मनस्वी, व्यवहार कुशल, लोकमान्य, विद्वान, लेखक, कवि जमींदार, मातृ-पितृ भक्त, राजमान्य, न्यायी एवं भाग्यवान् होता है।

मीन राशि में बुध हो तो जातक स्वाभिमानी, सदाचारी, सहनशील, भाग्यवान्, प्रवास में सुखी, मिष्टभाषी, कार्यदक्ष, धनसंही, नकल करने का स्वभाव, चिन्तित एवं छोटे दिल का होता है।

## गुरु

द्वादश भाव में गुरु हो तो जातक मितभाषी, योगाभ्यासी, परोपकारी, उदार, आलसी, सुखी, मितव्ययी, शास्त्रज्ञ, सम्पादक, लोभी, यात्री एवं दुष्ट चित्तवाला होता है।

वृष राशि में गुरु हो तो जातक पुष्टशरीर वाला, सदाचारी, धनवान्, आस्तिक, चिकित्सक, विद्वान, बुद्धिमान्, जीवन में स्थिरता, दृढ़विचार, दिखावा करने वाला एवं कामुक होता है।

## शुक्र

दशम भाव में शुक्र हो तो जातक गुणवान्, दायालु, विलासी, ऐश्वर्यवान्, भाग्यवान्, न्यायवान् विजयी, गानप्रिय, धार्मिक ज्योतिषी एवं लोभी होता है।

मीन राशि में शुक्र हो तो जातक जौहरी, शिल्पज्ञ, जमीन्दार, अच्छ और हास परिहास का स्वभाव, विद्वान, लोकप्रिय, शान्त, धनी, कार्यदक्ष, कृषिकर्म का मर्मज्ञ, शिष्ट और सभ्य सम्मानित एवं आराम तलब होता है।

### शनि

दशम भाव में शनि हो तो जातक विद्वान, ज्योतिषी, राजयोगी ,न्यायी, नेता, धनवान्, राजमान्य, उदरविकारी, अधिकारी, चतुर, भाग्यवान् परिश्रमी, निरुद्पयोगी एवं महत्त्वाकांक्षी होता है।

मीन राशि में शनि हो तो जातक अविचारी, शिल्पकार हतोत्साही, धनी, प्रसिद्ध, सुखी एवं दूसरों की सहायता करने वाला होता है।

### राहु

दशम भाव में राहु हो तो जातक मितव्ययी, वाचाल, सन्ततिक्लेशी चन्द्रमा से युक्त राहु के होने पर राजयोग कारक अनियमित कार्यकर्ता एवं आलसी होता है।

मीन राशि में राहु हो तो जातक आस्तिक, कुलीन, शान्त, कलाप्रिय और दक्ष होता है।

### केतु

चतुर्थ भाव में केतु हो तो जातक, कार्यहीन, चंचल, वाचाल एवं निरुत्साही होता है।  
कन्या राशि में केतु हो तो जातक सदारोगी, मूर्ख, मन्दाग्निरोग एवं व्यर्थवादी होता है।

## दशा विश्लेषण

महादशा :- राहु  
( 14/04/2025 - 17/09/2033 )

राहु की अन्तर्दशा 14/04/2025 को आरम्भ और 17/09/2033 को समाप्त होगी। इसकी अवधि 18 वर्ष है। आपकी जन्मकुण्डली में राहु-दशम भाव में स्थित है। राहु की दृष्टि-चतुर्थ भाव पर है। इसके पूर्व आपकी सात वर्ष की मंगल दशा चल रही थी। मंगल के कारण आपको अचल सम्पत्ति की प्राप्ति, हर प्रकार का लाभ तथा महत्वाकांक्षाओं की पूर्ति होगी। राहु की इस दशा में आपकी प्रगति, जीविका में उन्नति होगी, यश और ख्याति की प्राप्ति तथा तीर्थस्थलों की यात्रा होगी।

स्वास्थ्य :

इस दशा के दौरान आपका स्वास्थ्य उत्तम रहेगा। आप में शक्ति होगी और आप शक्तिशाली तथा सक्रिय होंगे। मौसम में परिवर्तन के कारण ज्वर, विषाणुज्वर संक्रामक रोग, रक्त संचार की समस्याएं, वातजन्य रोग, निचली भुजाओं की समस्या, चर्मरोग आदि हो सकते हैं। कुछ सावधानी बरत कर इनमें से अधिकांश से बचा जा सकता है।

अर्थ और व्यवसाय :

इस दशा के दौरान आपकी आर्थिक स्थिति मजबूत होगी। व्यापार-व्यवसाय में अच्छी कमाई होगी। सट्टे में अच्छा लाभ मिलेगा। पिता से कुछ लाभ मिलेगा। आपका बैंक बैलेंस सन्तोषजनक रहेगा। जीविका तथा व्यवसाय के लिए विधि, उद्घ्यन, वैमानिकी, कला, अन्तरिक्ष अनुसन्धान, कम्प्यूटर, खाद्यान्न से संबंधित सेवा आदि का चयन कर सकते हैं। कपड़ा, रत्न, दवा, चमड़ा, एण्टीबायोटिक दवा, प्लास्टिक, रबड़ तथा भोजन से संबंधित व्यापार लाभदायक होगा। सेवारत लोगों को लाभ, पदोन्नति, सहकर्मियों तथा वरिष्ठ अधिकारियों से सद्व्यवहार और कार्य स्थान में स्थिति अनुकूल होगी। व्यवसाय तथा व्यापार से जुड़े लोगों की अच्छी आय तथा लाभ में वृद्धि होगी। इस दशा के दौरान आपकी जीवन वृत्ति में उन्नति होगी। आपको यश तथा ख्याति की प्राप्ति होगी और आप मानवीयता के कार्य करेंगे।

वाहन, यात्रा, जमीन-जायदाद :

इस दशा के दौरान आपको सुख आराम मिलेगा। मंगल की अन्तर्दशा में आपको अचल सम्पत्ति, जमीन-जायदाद और वाहन का सुख मिलेगा। गुरु की अन्तर्दशा में छोटी तथा दूर की यात्रा होगी।

शिक्षा :

आपकी शिक्षा उत्तम होगी। आप सभी परीक्षाओं और प्रतियोगिताओं में अच्छा करेंगे। विज्ञान, कला, कम्प्यूटर विज्ञान, वाणिज्य-व्यापार, भोजन, प्रौद्योगिकी आदि में आपकी रुचि हो सकती है। आपकी इच्छा शक्ति मजबूत है और आप स्वभाव से स्वतंत्र हैं तथा मौलिकता और मानसिकता से सम्बद्ध सभी विषयों में अच्छा करेंगे।

परिवार :

परिवार के साथ आपका संबंध मधुर रहेगा। आपके बच्चे अच्छा करेंगे और आपको उनसे आनन्द मिलेगा। आपके जीवनसाथी को अचल सम्पत्ति की प्राप्ति, जीविकोपार्जन में प्रगति, सम्पत्ति तथा सुख की प्राप्ति होगी। आपकी माता की यात्रा तथा साझेदार से लाभ मिलेगा, किन्तु, उन्हें स्वास्थ्य के प्रति सावधान रहना होगा। आपके पिता को लाभ, बचत तथा सुख की प्राप्ति होगी। आपके छोटे भाई-बहनों को अचानक लाभ तथा परिवर्तन होगा। आपके बड़े भाई-बहनों की यात्रा, व्यय तथा मामूली स्वास्थ्य-समस्याएं हो सकती हैं।

अन्तर्दशा :

राहु की महादशा में राहु की अन्तर्दशा के फलस्वरूप आपके जीविकोपार्जन में उन्नति तथा यात्रा होगी और आपको सुख मिलेगा। गुरु की अन्तर्दशा के कारण यात्रा, व्यय और धार्मिक कार्यों की ओर झुकाव होगा। शनि की अन्तर्दशा में आपको यश ख्याति, कार्यों में सफलता तथा सम्पत्ति की प्राप्ति होगी। बुध की अन्तर्दशा में सम्पत्ति तथा समृद्धि की प्राप्ति, प्रतिद्वन्द्वियों पर विजय और यात्रा होगी जबकि केतु की अन्तर्दशा कुछ समस्या उत्पन्न कर सकती है। शुक्र की अन्तर्दशा के दौरान आपको यश, ख्याति, सफलता, सुख तथा जीवन-वृत्ति में प्रगति होगी। सूर्य के कारण कुछ परिवर्तन हो सकता है जबकि चन्द्र की अन्तर्दशा में साझेदारों से लाभ होगा और शादी तथा यात्रा होगी। मंगल की अन्तर्दशा में सम्पत्ति, हर प्रकार का लाभ तथा जमीन-जायदाद में वृद्धि होगी।

**अंतर्दशा :- राहु - बुध  
( 14/04/2025 - 19/03/2026 )**

राहु महादशा की अवधि 18 वर्ष होती है। आपके लिए यह 14/04/2025 को प्रारंभ होकर 17/09/2033 को समाप्त होगी। इस महादशा में बुध अंतर्दशा की अवधि 2 वर्ष 6 मास 18 दिन रहेगी जो आपके लिए 14/04/2025 को प्रारंभ होकर 19/03/2026 को समाप्त होगी।

बुध आपकी जन्मपत्री में दशम भाव में स्थित है। दशम भाव सम्मान और सत्ता, सफलता, पद और साख, दुनियादारी, प्रोन्नति, नियुक्ति, धार्मिक कार्य, सरकार से सम्मान और जांघों का परिचायक है। दशम भाव में स्थित होकर बुध कुंडली के चतुर्थ भाव पर दृष्टि डाल रहा है और उसे अपने कारकत्व से प्रभावित कर रहा है।

इस अवधि में आप विभिन्न विषयों के विद्वान हो सकते हैं। स्पष्टवादी हो सकते हैं। दान-धर्म में रुचि होगी। व्यापार, धर्म और अध्यात्म में सफल होंगे। यह अंतर्दशा बहुत शुभ रहेगी। नेत्र के रोगों से बचाव करना श्रेयस्कर रहेगा।

शुभत्व में वृद्धि और अरिष्ट से बचाव के लिए बुध के तांत्रिक मंत्र के 36000 जाप करें।

**अंतर्दशा :- राहु - केतु  
( 19/03/2026 - 06/04/2027 )**

राहु महादशा की अवधि 18 वर्ष होती है। आपके लिए यह 14/04/2025 को प्रारंभ होकर 17/09/2033 को समाप्त होगी। इस महादशा में केतु अंतर्दशा की अवधि 1 वर्ष 18 दिन होगी जो आपके लिए 19/03/2026 को प्रारंभ होकर 06/04/2027 को समाप्त होगी।

केतु आपकी जन्मपत्रिका में चतुर्थ भाव में स्थित है। चतुर्थ भाव माता, स्वयं का मकान, घरेलू वातावरण, व्यक्तिगत संबंध, वाहन, बाग-बगीचे, पैतृक संपत्ति, शिक्षा, दूध, तालाब और झील आदि का प्रतिनिधि है। चतुर्थ भाव में स्थित होकर केतु आपकी कुंडली के दशम भाव पर दृष्टि डाल रहा है और उसके कारकत्व को प्रभावित कर रहा है।

इस अवधि में आपके जीवन में असाधारण परिवर्तन आ सकते हैं, जो अशुभ हो सकते हैं। पारिवारिक जीवन में भी समस्याएं हो सकती हैं।

अरिष्ट से बचाव के लिए : हनुमान जी की उपासना करें, प्रत्येक दिन हनुमान चालीसा का पाठ करें।

शनिवार और मंगलवार को उपवास करें। उपवास के बाद हनुमान जी की उपासना करें, मीठा भोजन ग्रहण करें। नमक का सेवन न करें।

निम्न उपाय भी लाभकारी रहेंगे :

- गरीबों को और मंदिर में कंबल बांटें

- कुत्तों को भोजन दें
- भूरा कुत्ता पालें और उसे नियमित रूप से भोजन दें

**अंतर्दशा :- राहु - शुक्र  
( 06/04/2027 - 06/04/2030 )**

राहु महादशा की अवधि 18 वर्ष होती है। आपके लिए यह 14/04/2025 को प्रारंभ होकर 17/09/2033 को समाप्त होगी। इस महादशा में शुक्र अंतर्दशा की अवधि 3 वर्ष होगी जो आपके लिए 06/04/2027 को प्रारंभ होकर 06/04/2030 को समाप्त होगी।

शुक्र आपकी जन्मपत्री में दशम भाव में स्थित है। दशम भाव सम्मान, जनता, सत्ता, सफलता, पद और साख, दुनियादारी, प्रोन्नति, नियुक्ति, धार्मिक कार्य, सरकार से सम्मान और जाघों का परिचायक है। शुक्र शुभ ग्रह है। दशम भाव में स्थित होकर शुक्र आपकी कुंडली के चतुर्थ भाव पर दृष्टि डाल रहा है और उसके कारकत्व को प्रभावित कर रहा है।

इस अवधि में आप विपरीत लिंग के व्यक्तियों से संबंधित गतिविधियों में भाग ले सकते हैं। सौंदर्य प्रसाधन, फैशन आदि से संबंधित व्यापार में लाभ हो सकता है। समाज में सफल रहेंगे, प्रसिद्ध बनेंगे। मन में कुछ नये, विचित्र विचार आ सकते हैं।

अरिष्ट से बचाव और शुभत्व में वृद्धि के लिए :

- लक्ष्मीजी की उपासना करें
- चींटियों को चीनी और आटा खिलाएं
- भोजन के समय पहली रोटी गाय को खिलाएं

**अंतर्दशा :- राहु - सूर्य  
( 06/04/2030 - 01/03/2031 )**

राहु महादशा की अवधि 18 वर्ष होती है। आपके लिए यह 14/04/2025 को प्रारंभ होकर 17/09/2033 को समाप्त होगी। इस महादशा में सूर्य की अंतर्दशा 10 मास 24 दिन की होगी जो आपके लिए 06/04/2030 को प्रारंभ होकर 01/03/2031 को समाप्त होगी।

सूर्य आपकी जन्मपत्री में एकादश भाव में स्थित है। एकादश भाव मित्रगण, समाज, महत्वाकांक्षा, इच्छाएं और उनकी पूर्ति, उद्यम में सफलता, धनलाभ, बड़े भाई, भाग्योदय और टखनों का परिचायक है। सूर्य आत्मा और पिता का कारक है। सूर्य शक्तिशाली ग्रह है। एकादश भाव में स्थित होकर सूर्य आपकी कुंडली के पंचम भाव पर दृष्टि डाल रहा है और उसके कारकत्व को प्रभावित कर रहा है।

इस अवधि में आप सिद्धांतों के पक्के और दूरदर्शी होंगे। सब कार्यों में सफलता मिलेगी पर बाधाओं को पार करने के बाद। लोकप्रियता के कारण शत्रु अधिक होंगे, जिनसे सावधान रहना श्रेयस्कर रहेगा।

अरिष्ट से बचाव और शुभत्व में वृद्धि के लिए सूर्य वैदिक मंत्र के 7000 जाप करें।

प्रातःकाल सूर्योदय के समय सूर्य नमस्कार करते हुए सूर्य को जल अर्पित करें।



**FUTUREPOINT**  
Astro Solutions



एक्स-35, ओखला फेज-2, नई दिल्ली-110020 फोन:- 011-40541000, 40541020  
Web: [www.futurepointindia.com](http://www.futurepointindia.com), e-mail: [mail@futurepointindia.com](mailto:mail@futurepointindia.com)